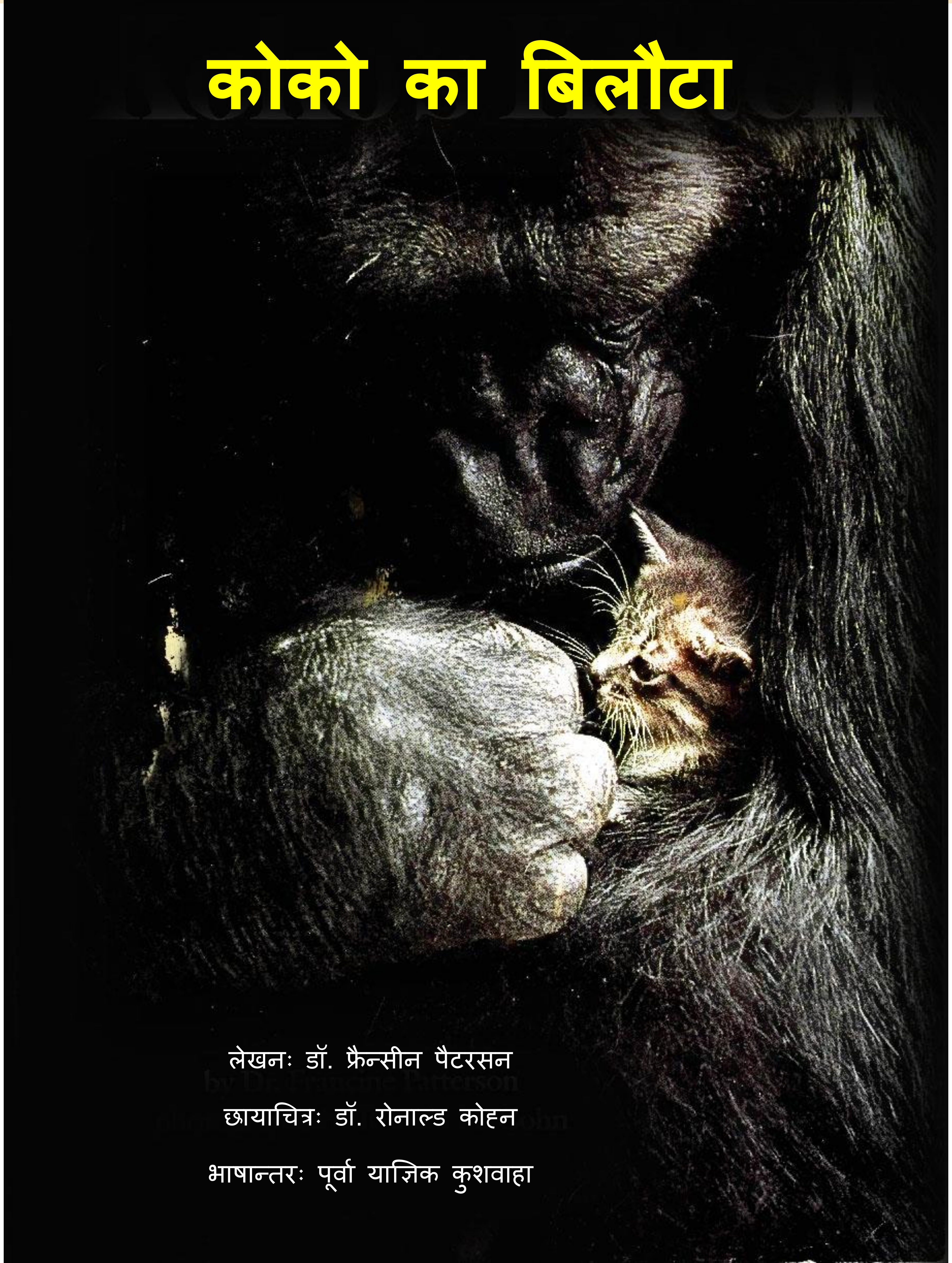
कोको का बिलौटा



लेखनः डॉ. फ्रैन्सीन पैटरसन

छायाचित्रः डॉ. रोनाल्ड कोहन

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

कोको का बिलौटा

लेखनः डॉ. फ्रैन्सीन पैटरसन

छायाचित्रः डॉ. रोनाल्ड कोहन

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

आभार

इस पुस्तक की तैयारी में

ग्रेस मैक्करॉन द्वारा दी गई बहुमूल्य सहायता के लिए

हम उनके आभारी हैं

और

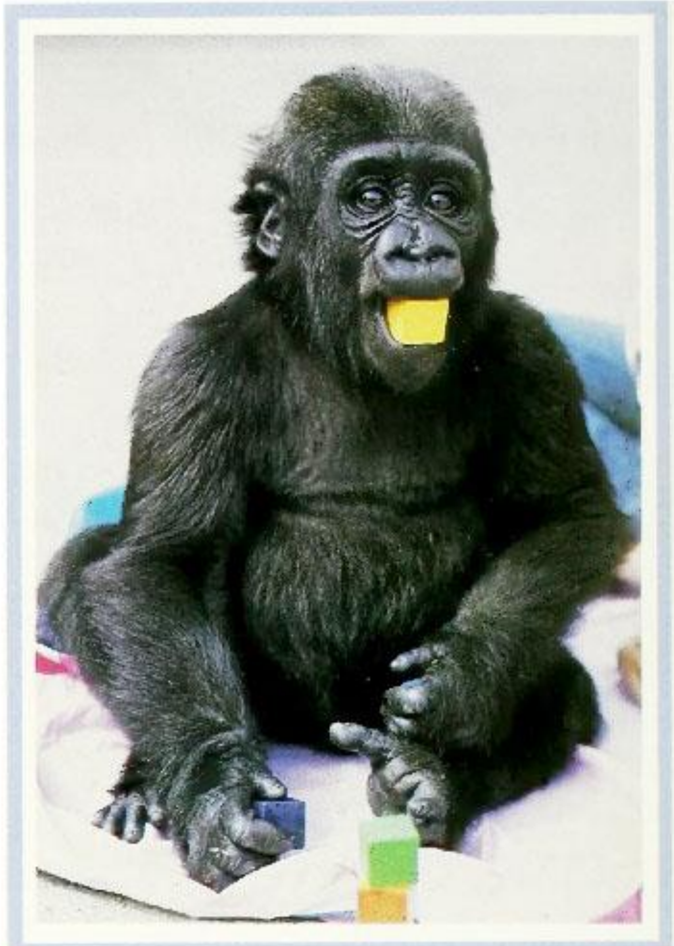
हमारी सम्पादिका जीन फाइवल के भी तहेदिल से आभारी हैं

जिन्होंने हमारे विचारों को हकीकत में बदला

"मुलायम अच्छी बिल्ली"

- कोको

कोको एक साल की



आमुख

पशुओं में यह काबलियत होती है कि वे अपने बारे में हमें बता सकें, बशर्ते हम उनसे पूछने का सही तरीका तलाश सकें।

1971 में मैं अपनी स्नातक स्तर की परियोजना पर काम कर रही थी। मेरी परियोजना यह जाँचने की कोशिश थी कि क्या गिब्बन (एक प्रकार के वानर) आईने में खुद को देख कर पहचान सकते हैं या नहीं। इस अध्ययन के दौरान मैंने सैन फ्रांसिस्को के चिड़ियाघर में कोको को पहली बार देखा, तब वह सिर्फ़ तीन महीने की थी। उसे अपनी माँ व अन्य गोरिल्लाओं से अपनी बीमारी के कारण दूर रखा जा रहा था। वह इतनी बीमार थी कि चिड़ियाघर के अधिकारियों को लग रहा था कि वह बच ही नहीं सकेगी। कोको को देखभाल करने वाले की ज़रूरत थी। उसे एक माँ की ज़रूरत थी।

तकरीबन उसी समय मैंने एक चिम्पांज़ी के बारे में एक भाषण सुना, जिसने अमरीकी सांकेतिक भाषा (एएसएल) द्वारा संप्रेषण करना सीखा था। एएसएल का अपयोग अमरीका में तकरीबन तीस लाख बधिर करते हैं।

इस भाषा में हाथ, बाँहों, शरीर के संकेत और चेहरे के हावभाव से शब्द दर्शाए जाते हैं। साढ़े चार वर्षों तक यह भाषा सीखने के बाद वह चिम्पांज़ी एक सौ बतीस शब्द संकेत कर सकता था। मैं बेहद प्रभावित हुई। मैं भी इस तरह का काम करना चाहती थी।

मैंने चिड़ियाघर के निदेशक से पूछा कि क्या मैं कोको के साथ ऐसा काम शुरु कर सकती हूँ। उन्हें डर था कि मैं कुछ सप्ताह काम करने के बाद काम छोड़ दूंगी, जो इस शिशु गोरिल्ला के लिए बहुत ही बुरा होगा। जब मैंने बताया कि मैं कोको के साथ चार या पाँच साल बिताने को तैयार हूँ, तो उन्होंने अनुमति दे दी। मैंने अपनी परियोजना फौरन बदली। मैंने प्रस्तावित किया कि मैं पशुओं की भाषागत क्षमताओं का अध्ययन करूंगी, जिसमें कोको मेरा विषय होगी। मैं उसे सांकेतिक भाषा सिखाऊंगी। किसी गोरिल्ला के साथ इस तरह का यह पहला अध्ययन था।

यह घटना चौदह वर्ष पहले की थी। 1972 में जो भाषा परियोजना मैंने आरंभ की थी, वह अब मेरे जीवन का कार्य बन चुका है। आज कोको क़रीब 500 शब्द जानती है और प्रतिदिन 100 से अधिक शब्दों का उपयोग करती है। वह कैसा महसूस कर रही है, उसे क्या चाहिए, यहाँ तक कि वह कौन है, यह सब बता सकती है। जब कोको से पूछा गया कि वह पशु है या व्यक्ति, उसने जवाब दिया, "उम्दा जानवर गोरिल्ला।"

मैंने इतने सालों में कोको को बड़े होते देखा है। एक वैज्ञानिक के रूप में मैंने उसके विकास के विभिन्न चरणों का दस्तावेजीकरण किया है। एक 'पालक' के रूप में मुझे उसकी हरेक उपलब्धि पर गर्व हुआ है। ऐसे कई मौके आए हैं, जब कोको ने मुझे स्तंभित किया है, शिक्षित किया है और प्रेरित भी किया है। पर इस सबने भी मुझे इस बात के लिए तैयार नहीं किया था कि वह एक सलेटी रंग की बिना पूंछ वाले बिल्ली के बच्चे को देख कैसी प्रतिक्रिया करेगी।

यह कहानी कोको और उसकी पालतू बिलौटे ऑल बॉल की है। इस कहानी में गोरिल्ला कोको हमें खुद के के बारे में ऐसी भाषा में बताती है जो प्रेम, गुस्सा, दुख और खुशी को अभिव्यक्त करते हैं।



कोको इशारे से "बिल्ली" कहते हुए

कोको का पूरा नाम हनाबी-को है। इस जापानी शब्द का मतलब है 'आतिशबाज़ी बच्चा'। दरअसल वह 4 जुलाई को पैदा हुई थी। हर साल मैं उस दिन कोको के लिए एक दावत का आयोजन करती हूँ, जिसमें केक, सेब का रस, और ढ़ेरों तोहफ़े होते हैं।

काको सालगिरह समझती है। जब उससे पूछा गया कि वह अपने जन्मदिन पर क्या करती है, कोको ने जवाब दिया, "खाना, पीना, बड़े (होना)।"

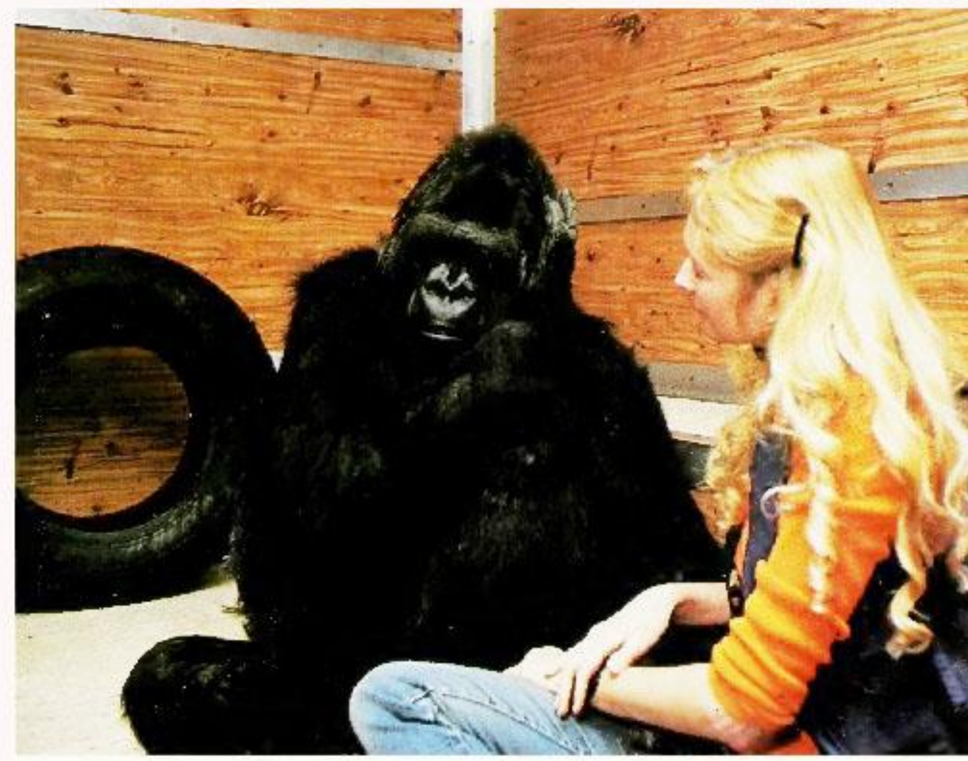
कोको की सालगिरह के तीन दिन पहले मैंने कहा, "मैं आज ख़रीददारी करने जा रही हूँ। तुम्हें अपनी सालगिरह पर क्या चाहिए?"

"सिरियल वहाँ, अच्छा वहाँ पीना," कोको ने इशारों से कहा।

"पर तोहफ़े में क्या चाहिए?" मैंने फिर पूछा।

"बिल्ली," कोको ने जवाब में कहा।

बाद में उसने दोहराया, "बिल्ली, बिल्ली, बिल्ली।"



कोको और पैनी



कोको ने इशारा किया "नाराज़" (मैड)

कोको ने जब बिल्ली मांगी मुझे अचरज नहीं हुआ। मैं सालों से कोको को क़िताबें पढ़ कर सुनाती रही हूँ। उसकी दो पसन्दीदा क़िताबें हैं 'पुस इन द बूटस्' और 'द थ्री लिटिल किटन्स्'।

जब मैं कहानियाँ सुनाती हूँ, कोको उनसे क़रीब से जुड़ जाती है। तीन छोटी बिलौटियों की कहानी में जब वे अपने दस्ताने खो देती हैं, कोको ग़ौर करती है कि बिल्ली माँ नाराज़ है और तीनों बिलौटियाँ रो रही हैं।

"नाराज़," कोको इशारा करती है।

कोको को चित्रों वाली क़िताबें बेहद पसन्द हैं। सबसे अधिक पसन्द हैं उसे गोरिल्ला वाली क़िताबें। उसके बाद आती हैं बिल्लियों की क़िताबें। वह अपनी कोई क़िताब उठा अकेले बैठना पसन्द करती है, ताकि वह चित्रों को ध्यान से देख सके और खुद को इशारे करे।

उसकी सालगिरह के दिन मैं उसे हमेशा की तरह कुछ देती हूँ - सेब का रस, कुछ ख़ास फल, मूंगफली-बादाम, और एक शिशु गुड़िया। मैं कोको को रूई से भरे मुलायम खिलौने नहीं देना चाहती, क्योंकि वह उन्हें फाड़ देती है।

सो, जो अकेली टिकाऊ खिलौना बिल्ली मुझे मिली वह मेल ऑर्डर कैटलॉग की थी। मैंने उसे फ़ौरन मंगवाया। वह सीमेंट से बनी थी और उस पर काला वायनल और मखमल मंढा हुआ था। मैंने उसे इसलिए चुना था क्योंकि वह एकदम असली लगती थी और मज़बूत थी - यानी गोरिल्ला रोधी। पर वह खिलौना बिल्ली, जन्मदिन तक आई ही नहीं, सो मैंने उसे क्रिसमस के लिए बचा लिया।

दिसम्बर में मैंने कोको लिए एक सूची बनाई। उसमें मैंने बीस चित्र आँके - फलों, सब्ज़ियाँ, मूंगफली-बादाम, गुड़ियाओं, कंघियों और कम्बलों के। हर साल क्रिसमस पर कोको को एक बड़ा स्टॉकिंग (लम्बा मोज़ा) मिलता है और ढ़ेरों तोहफ़े। इसलिए उसे क्रिसमस बहुत ही अच्छी लगती है।

"तुम्हें क्रिसमस में क्या चाहिए?" मैंने कोको को चित्र सूची दिखा पूछा।

कोको ने उन चित्रों को बड़े ध्यान से देखा, तब एक गुड़िया, मूंगफली-बादाम और एक बिल्ली की ओर इशारा किया।

मैंने कोको के लिए मूंगफली-बादाम और एक नई गुड़िया खरीद ली। खिलौने वाली बिल्ली को कागज़ में लपेटा और दूसरे तोहफ़ों के साथ रख दिया।



क्रिसमस के दिन कोको ने अपना सिरियल का नाश्ता किया और तब अपना मोज़ा खोला। उसमें मूंगफ़ली-बादाम भरे हुए थे। उसने उन्हें किनारे फेंका और अगले तोहफ़े की ओर बढ़ी।

कोको ने गुड़िया खोली।

''वह बू,'' कोको ने इशारा किया।

तब मखमल से मढ़ी बिल्ली खिलौने की बारी आई।

''वह लाल,'' उसने इशारा किया।

कोको अक्सर ''लाल'' शब्द का इस्तेमाल नाराज़गी जताने के लिए करती है। वह बहुत परेशान हो गई। वह दीवार को पीटती आगे-पीछे दौड़ने लगी। वह मेरे सामने प्रदर्शन हमला (डिस्पले चार्ज) कर रही थी। यह प्रदर्शन भारी गुस्से से भरा था।

जब गोरिल्ला बहुत डरे होते हैं या भारी खतरे का सामना करते हैं उनके लिए इस तरह का आक्रामक प्रदर्शन करना स्वाभाविक होता है। वे पैर बगल में करते हुए दौड़ते हैं, अपनी छाती ठोकते हैं, तब चारों हाथ-पैरों पर नीचे हो जाते हैं, फिर आगे-पीछे दौड़ते हैं।

पर यह तो क्रिसमस का दिन था, जो अमूमन कोको के लिए खुशी का होता है। और फिर वह उन लोगों के साथ थी जिन्हें वह प्यार करती है।

उस दिन कुछ देर बाद बारबरा आई जो कोको को तब से जानती है जब वह शिशु थी।

''यह तो काली बिल्ली-सी लगती है,'' बारबरा ने कोको से कहा। ''क्या तुम मुझे इसे दिखाओगी?''

कोको ने कोई जवाब नहीं दिया और अपने सिर को कम्बल से ढक लिया।

''क्या मैं इसे देख सकती हूँ?'' बारबरा ने पूछा।

कोको ने बिल्ली को एक चीथड़े से ढक दिया, तब उसे हवा में उछाल दिया। ''बिल्ली वह,'' उसने इशारे से कहा।

''मुझे देखने दो, मेहरबानी से,'' बारबरा बोली।

कोको ने उसे एक डायनासोर खिलौना पकड़ाया।

मैं आख़िरकार कोको के विचित्र बरताव को समझी। वह अपने तोहफ़े से नाखुश थी। मैंने भूल की थी। उसे सीमेंट और मखमल वाली खिलौना बिल्ली नहीं चाहिए थी। कोको को एक असली बिल्ली चाहिए थी। अपनी पालतू बिल्ली।

खिलौना बिल्ली



हम जहाँ रहते हैं वहाँ चीज़ें जल्दी से नहीं होतीं। हर दिन अपनी ही गतिविधियों से भरा होता है। सो लगभग छह महीने बाद मेरी एक सहायिका कैरन, तीन शिशु बिल्लियों के साथ आई। उनकी माँ ने उन्हें त्याग दिया था, और उनकी देखभाल एक केयर्न टैरियर कर रही थी।

कैरन ने कोको को बिलौटियाँ दिखाईं।

''वह प्यार'' कोको ने इशारा किया।

जब कैरन उन्हें दिखा रही थी कोको ने हरेक की फूंक जाँच की, जैसा वह किसी भी नए पशु या इन्सान को मिलने पर उनके चेहरे पर फूंक कर करती है। मुझे लगता है कि वह ऐसा उनकी बू को ठीक से पाने के लिए करती है। जब वह किसी व्यक्ति पर फूंकती है, वह उम्मीद रखती है कि वह भी पलट कर फूंक मारेगा।

पहली बिलौटी सुरमई और सफ़ेद थी। कोको की फूंक परीक्षा ने उसे चौंका दिया। दूसरा बिना पूंछ वाला सुरमई धारीदार बिलौटा था। वह भी फूंक परीक्षा से घबरा गया। तीसरी एक धारीदार भूरी बिलौटी थी, जिसने कोई प्रतिक्रिया नहीं की।

''तुम्हें कौन सी चाहिए,'' हमने पूछा।

''वह,'' कोको ने बिना पूंछ वाले धारीदार बिलौटे की ओर इशारा किया।



कोको अपनी बिल्ली चुनते हुए

मुझे पक्की तौर पर पता नहीं कि कोको ने बिना पूंछ वाले सुरमई बिलौटे को क्यों चुना। मैंने उससे कभी पूछा नहीं। शायद इसलिए क्योंकि उसकी पूंछ नहीं थी - गोरिल्ला की भी पूंछ नहीं होती।

उस रात बिल्ली के तीनों बच्चे कैरन के साथ लौट गए। दो दिन बाद वे कोको से फिर मिलने आए। कोको उनसे मिल खुश हुई।

"मुलाकात, प्यार बाघ बिल्ली," कोको ने संकेतों से कहा।

उसने पहले सुरमई और सफ़ेद बिलौटी को उठाया। तब बिना पूंछ वाले को और उसे अपनी जांघ पर टिकाया। कुछ देर बाद उसे अपनी गरदन के पीछे कर दिया।

"बेबी," उसने इशारे से कहा।

उसने पालथी मारी, बिलौटे को गोद में रख उसके पंजे जाँचे। कोको ने उसके पंजे दबाए और बिलौटे के नाखून निकल आए।

"बिल्ली नोचती," कोको ने संकेत किया। "कोको प्यार।"

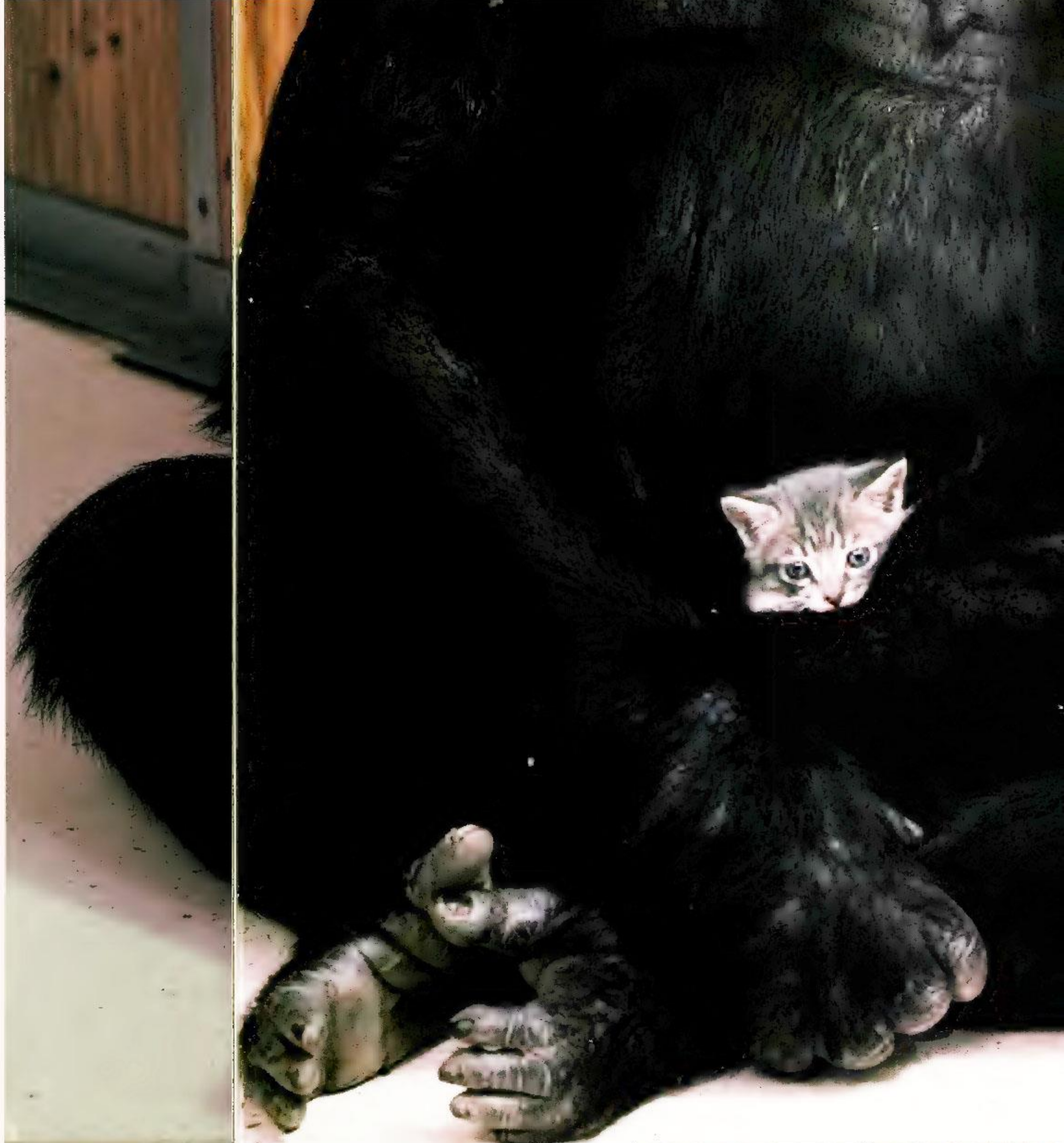
"तुम अपने बिल्ली का क्या नाम रखोगी?" मैंने पूछा।

"ऑल-बॉल," (पूरी गेंद) कोको ने इशारे से कहा।

"हाँ," मैंने कहा। "वह सचमें गेंद जैसी है, उसकी पूंछ जो नहीं है।"

बॉल, उस रात हमारा मेहमान रहा। सप्ताह खत्म होने तक बॉल हमारे परिवार का स्थाई सदस्य बन चुका था।

कोको को अंततः अपनी बिल्ली मिल गई।





शुरुआती सप्ताहों में बॉल मेरे घर पर रहता था। हर शाम छह बजे मैं उसे कोको से मिलाने ले जाती। मैं जब कोको को सोने के लिए तैयार करती बॉल मेरी जेब में होता। कोको जल्द ही बॉल के वहाँ होने की आदी हो गई।

"रात को क्या-क्या होता है कोको?" मैंने पूछा।

"ऑल बॉल," कोको ने इशारा किया।

"सही है," मैंने कहा, "बॉल मिलने आता है।

जब वह कुछ बड़ा हो गया, बॉल अपने आप कोको के ट्रेलर में घुस जाता। पहले-पहल मुझे इससे फ़िक्र होती। मुझे पता जो नहीं था कि बिना किसी की निगहबानी के कोको उससे कैसा बरताव करेगी। पर हुआ यह कि कोको ने हमेशा उससे कोमल बरताव किया। बॉल को कभी कोको से डर नहीं लगा।

बिल्लियों के शिशुओं को छह सप्ताह के होने तक उनकी माताओं से अलग नहीं किया जाना चाहिए। पर बेचारे बॉल की माँ ने उसे पैदा होने पर ही त्याग दिया था। शायद यही उसकी कुछ ख़ामियों का कारण था।

बॉल सामान्य न था। वह बेहद आक्रामक था। वह लोगों के पास जाता और उन्हें अकारण ही काटता। वह कोको को भी काटता।

''बिल्ली काटता। बहुत बुरा,'' कोको इशारे से कहती, पर उसे पलट कर मारती नहीं।

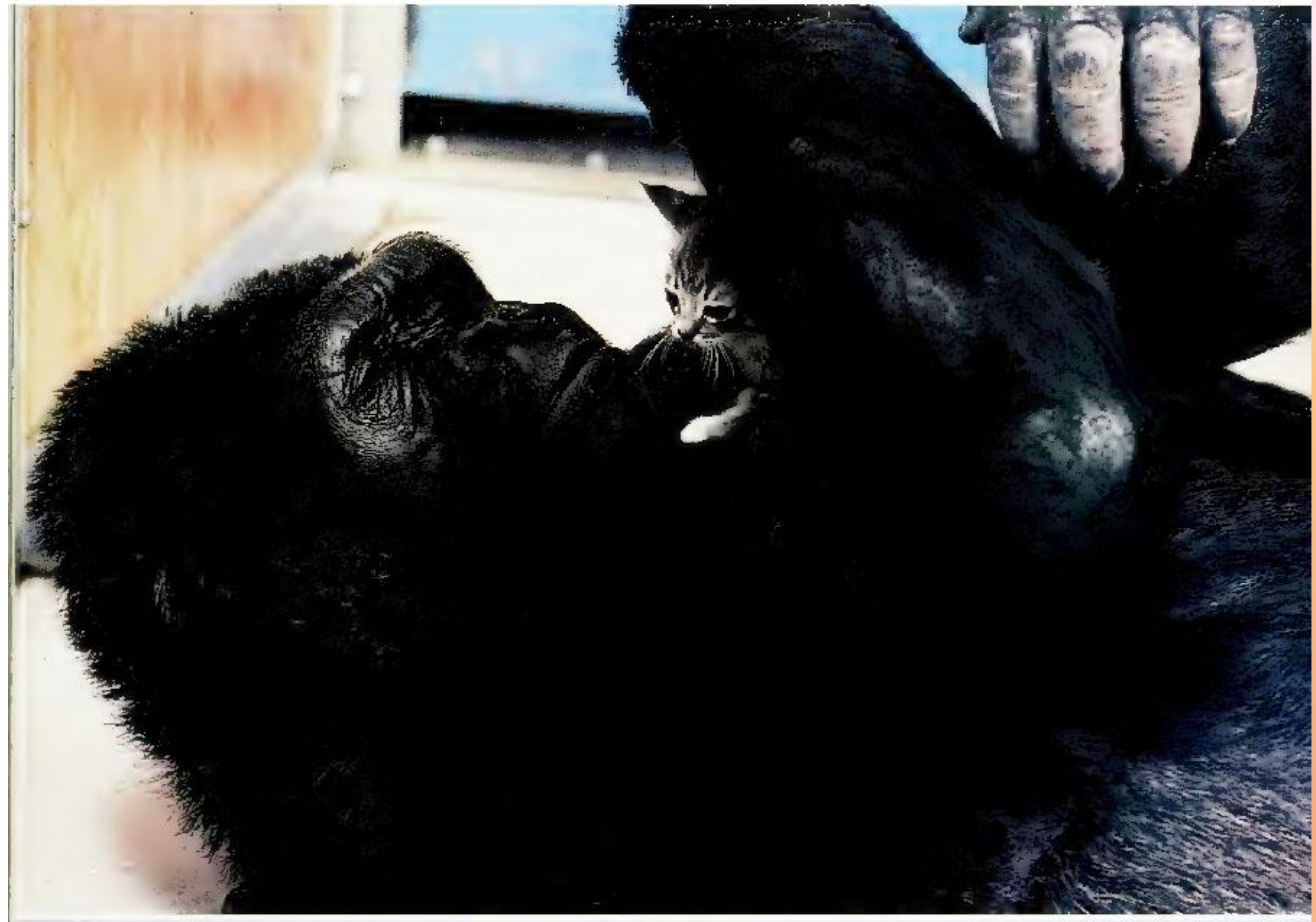
कोको को काटे या खरोंचे जाना पसन्द न था, पर वह बॉल की इन शैतानियों के बावजूद बॉल से प्यार करती थी।

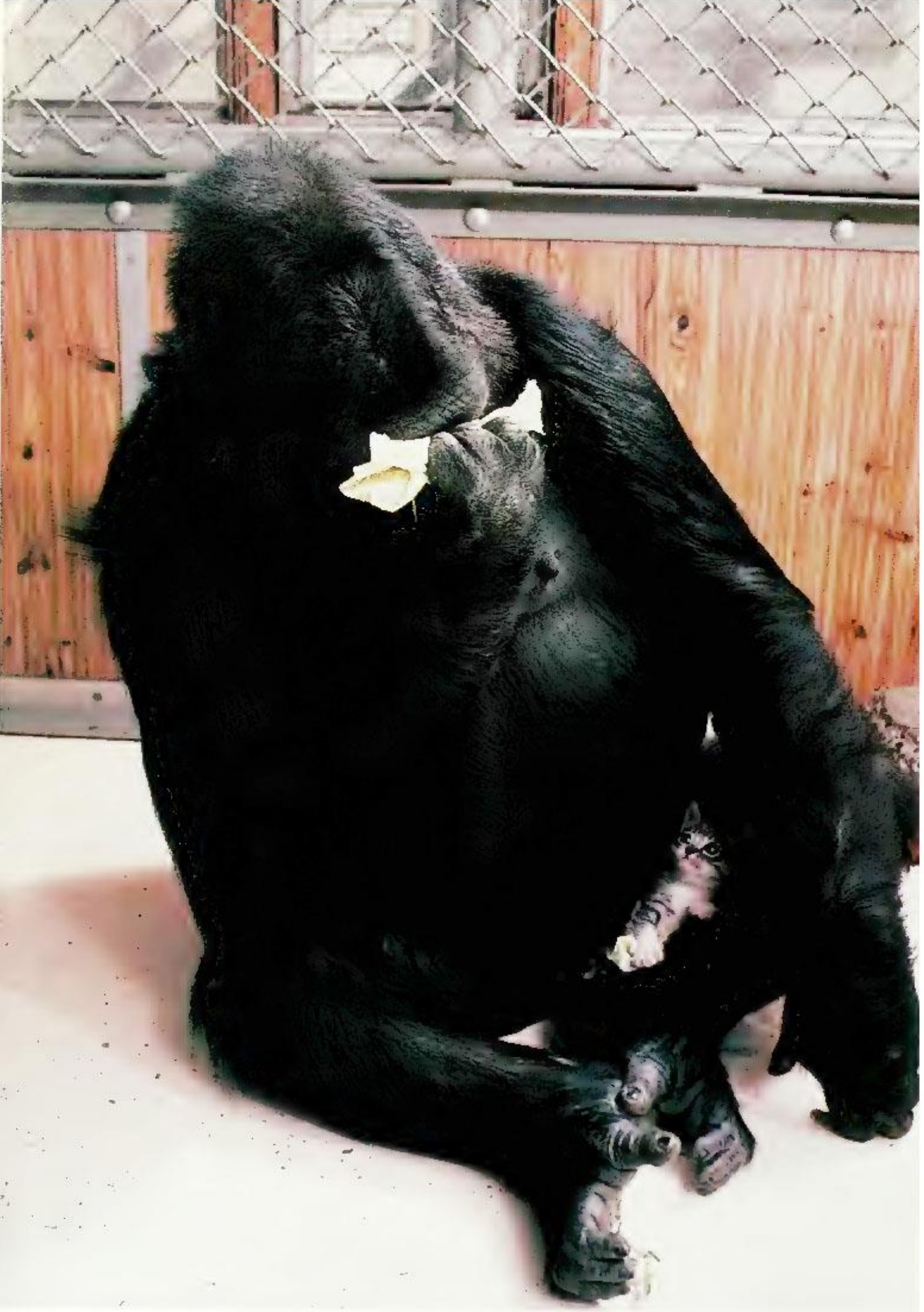
''बॉल के बारे में एक कहानी सुनाओ,'' मैंने कहा।

''कोको प्यार बॉल,'' उसने इशारे से कहा।

कोको प्यार का संकेत करते हुए।







बॉल को अपनी जाँघ में रख अपना कपाल पोंछते हुए।



कोको बॉल को पीठ पर उठाए हुए, मानो वह गोरिल्ला शिशु हो

कोको बॉल से ऐसा बरताव करने लगी मानों वह उसका ही शिशु हो।

पहली बार जब कोको ने उसे उठाया था, उसने बॉल को अपनी जाँघ में दबाने की कोशिश की थी। गोरिल्ला माँ अपने बच्चे को ऐसे ही उठाती है। बड़े गोरिल्ला बच्चे अपनी माँ के पीठ पर सवार होते हैं। कोको ने बॉल के साथ यह कोशिश भी की।

कोको एक अच्छी गोरिल्ला माँ थी। वह बॉल के बाल झाड़ती, उसके शरीर को थपकाती, ताकि उसे साफ़ रख सके। वह उसकी आँखें, कान और मुँह को जाँचती। यह देखने की सब ठीक-ठाक है या नहीं। कोको ने ही बॉल के कानों में लगी घुन तलाशी थी।

कोको के दैनिक पाठों के दौरान बॉल अक्सर हमारी बातचीत का विषय बनता।

"मुलाकात प्यार," कोको ने तब संकेत किया, जब मैं बॉल के साथ सुबह के एक पाठ के लिए पहुँची।

"बॉल," मैंने कहा।

"मुसीबत," कोको ने इशारा किया। "प्यार।"

ऐसा लगता था कि कोको को अपनी बिल्ली के बारे में बात करना पसन्द आता था। यह बातचीत शोध सहायिका जैनेट और कोको के बीच हुईः

"अगर तुम अपनी बिल्ली बॉल के बारे में बताओगी तो मैं तुम्हें अंगूर दूंगी," जैनेट ने कहा।

"मुलायम," कोको ने इशारा किया।

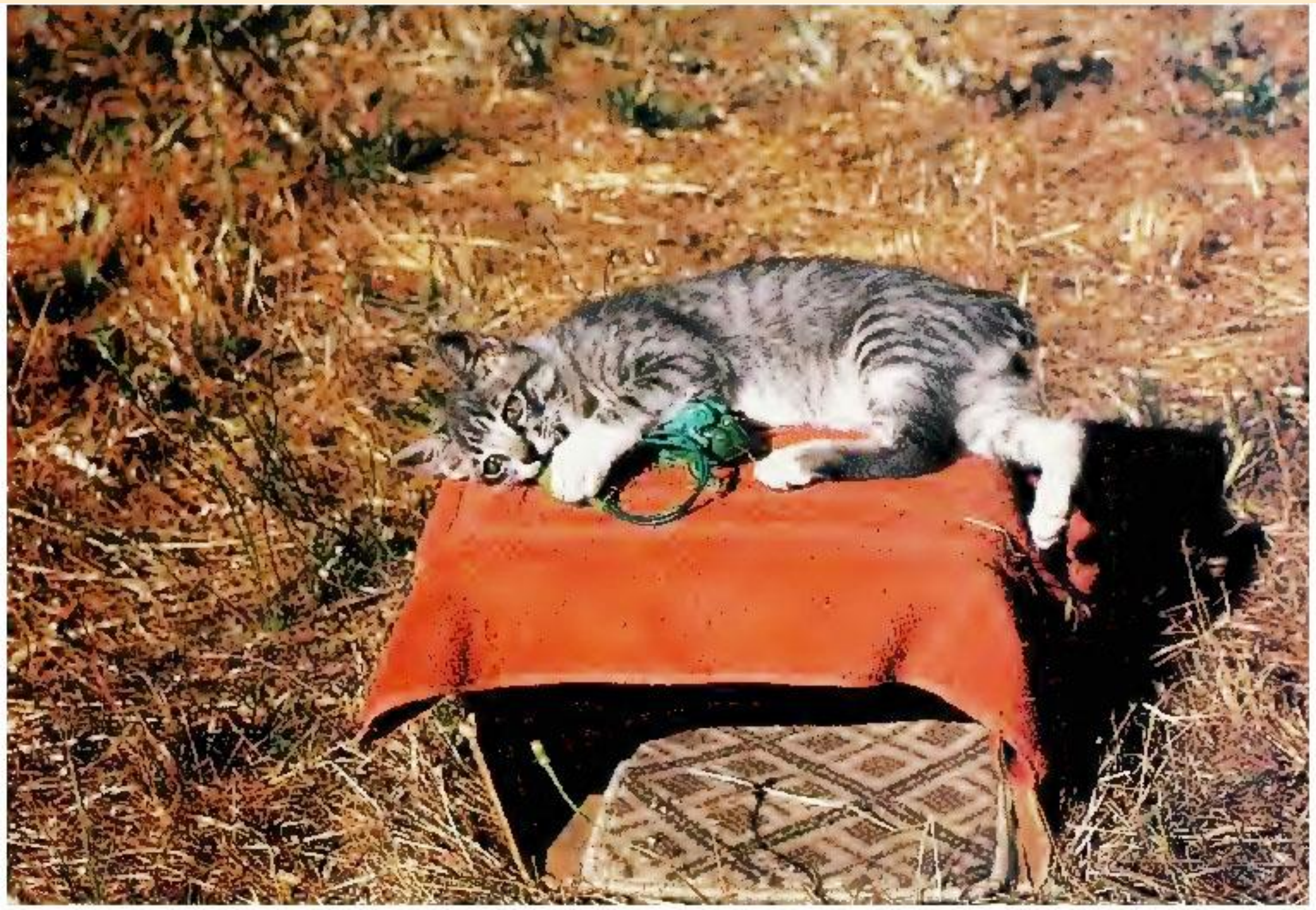
"क्या तुम बॉल को प्यार करती हो?" जैनेट ने पूछा।

"मुलायम अच्छी बिल्ली, बिल्ली," कोको ने इशारों में बताया।

संकेतों के अलाव चित्रकारी से संप्रेषण करना भी एक तरीका है। मैंने कोको की समझ, उसकी धारणाओं को जाँचा। बॉल को एक नारंगी रंग के तौलिए पर एक हरे खिलौने के साथ लिटाया। मैंने कोको को एक कैनवास और कुछ रंग दिए, और उससे एक चित्र बनाने को कहा। चुनने के लिए कोको पास दस रंग थे। पहले उसने बॉल के शरीर को दर्शाने के लिए काला रंग चुना। तब तौलिए के लिए नारंगी और खिलौने के लिए हरा चुना।

"कोको, और बॉल की आँखों के लिए?" मैंने पूछा

कोको ने हल्का भूरा रंग चुना।



कोको के लिए पोज़ करते हुए बॉल।

बॉल का कोको द्वारा बनाया चित्र।





गुदगुदी पाने की कोशिश करती कोको।

कोको को खेल खेलना बहुत ही पसन्द है। उसके पसन्दीदा खेल हैं, "पीछा करना," "फूंक मारना" और "गुदगुदी।"

जब कोई उसे गुदगुदी करे कोको को बड़ा अच्छा लगता है, और वह सोचती है कि दूसरों को भी अच्छा लगता होगा।

जब कोको और बॉल फ़र्श पर लेटे हुए थे, कोको ने बॉल को "गुदगुदी" का इशारा किया।

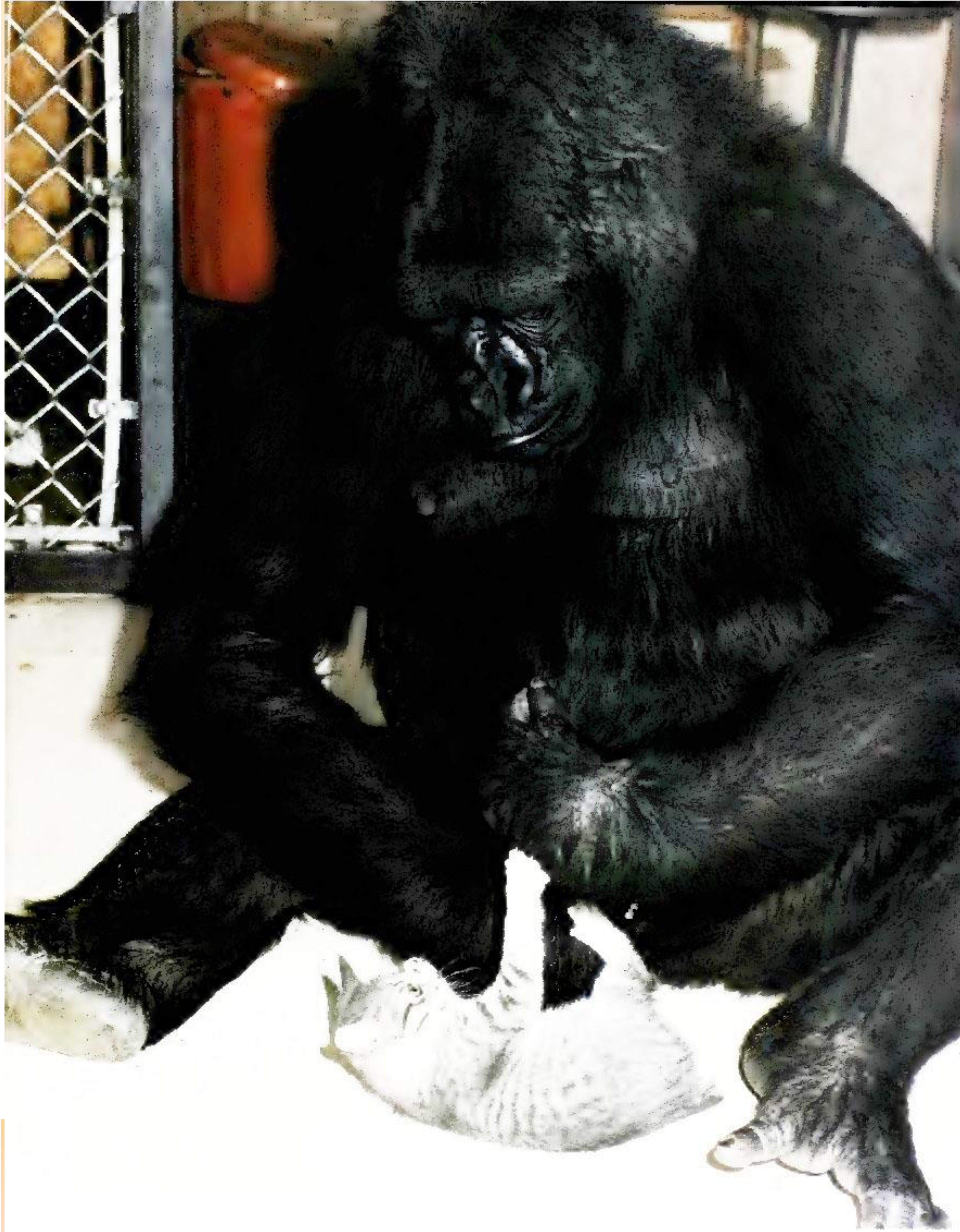
बॉल अच्छा गुदगुदी करने वाला नहीं है, न ही उसे गुदगुदी करवाना पसन्द है। सो, मैंने और कोको ने ढोंग किया। मैंने बॉल को हाथ में उठाया और कोको को गुदगुदी की। कोको को यह बड़ा मज़ाकिया लगा।

"पीछा करना, फूंक मारना, मज़ा," कोको ने इशारे से कहा।

फूंक मारने के खेल में कोको अपने साथ खेलने वाले के चेहरे पर पूरे दम से फूंक मारती है। ज़ाहिर ही है कि यह बॉल का पसन्दीदा खेल नहीं था।

पीछा करने के खेल में खेलने वाले आगे-पीछे दौड़ते हुए एक-दूसरे का पीछा करते हैं। यह जंगल में रहने वाले गोरिल्लाओं का लोकप्रिय खेल है। पर बॉल को यह खेल कभी ठीक से समझ ही नहीं आया।

कोको को यह अहसास नहीं हुआ था कि यह ज़रूरी नहीं कि गुरिल्ला खेल बिल्लियों को भी पसन्द आएं। पर कोको यह ज़रूर समझ गई कि उन्हें सौहार्द, प्यार और ध्यान पाना पसन्द आता है। और कोको यह सब बॉल को देती है।



कोको बॉल को गुदगुदी करते हुए।



दिसम्बर की एक धुंध भरी सुबह, एक सहायक ने मुझे बताया कि बॉल को एक गाड़ी ने टक्कर मार दी। उसकी मौके पर ही मौत हो गई।

मैं सकते में आ गई। मेरे मन में ऐसी घटना की कोई तैयारी नहीं थी। मुझे अहसास ही नहीं हुआ था कि मुझे उससे कितना लगाव हो गया था। मुझे यह भी पता नहीं था कि यह ख़बर कोको को यह किस तरह प्रभावित करेगी। बॉल उसके लिए बहुत मायने रखता था। वह तो कोको का बेबी था।

मैं फ़ौरन उसे बताने गई। मैंने उसे बताया कि बॉल को एक गाड़ी ने टक्कर मार दी है और कोको उसे अब कभी नहीं देख सकेगी।

कोको ने कोई प्रतिक्रिया नहीं की। मैंने सोचा कि वह बात समझी ही नहीं है। सो मैं ट्रेलर से निकल गई।

दस मिनट बाद मैंने कोको को रोते सुना। यह उसकी विपदा की आवाज़ थी - ऊँची चीखों की लम्बी कड़ी।

मैं भी रोई।

तीन दिनों बाद कोको और मैंने बॉल के बारे में बात की।

''क्या तुम अपनी बिल्ली के बारे में बात करना चाहती हो?'' मैंने उससे पूछा।

''रोना,'' कोको ने इशारा किया।

''इस बारे में कुछ और बता सकती हो?'' मैंने आगे पूछा।

''अंधा,'' कोको ने इशारा किया।

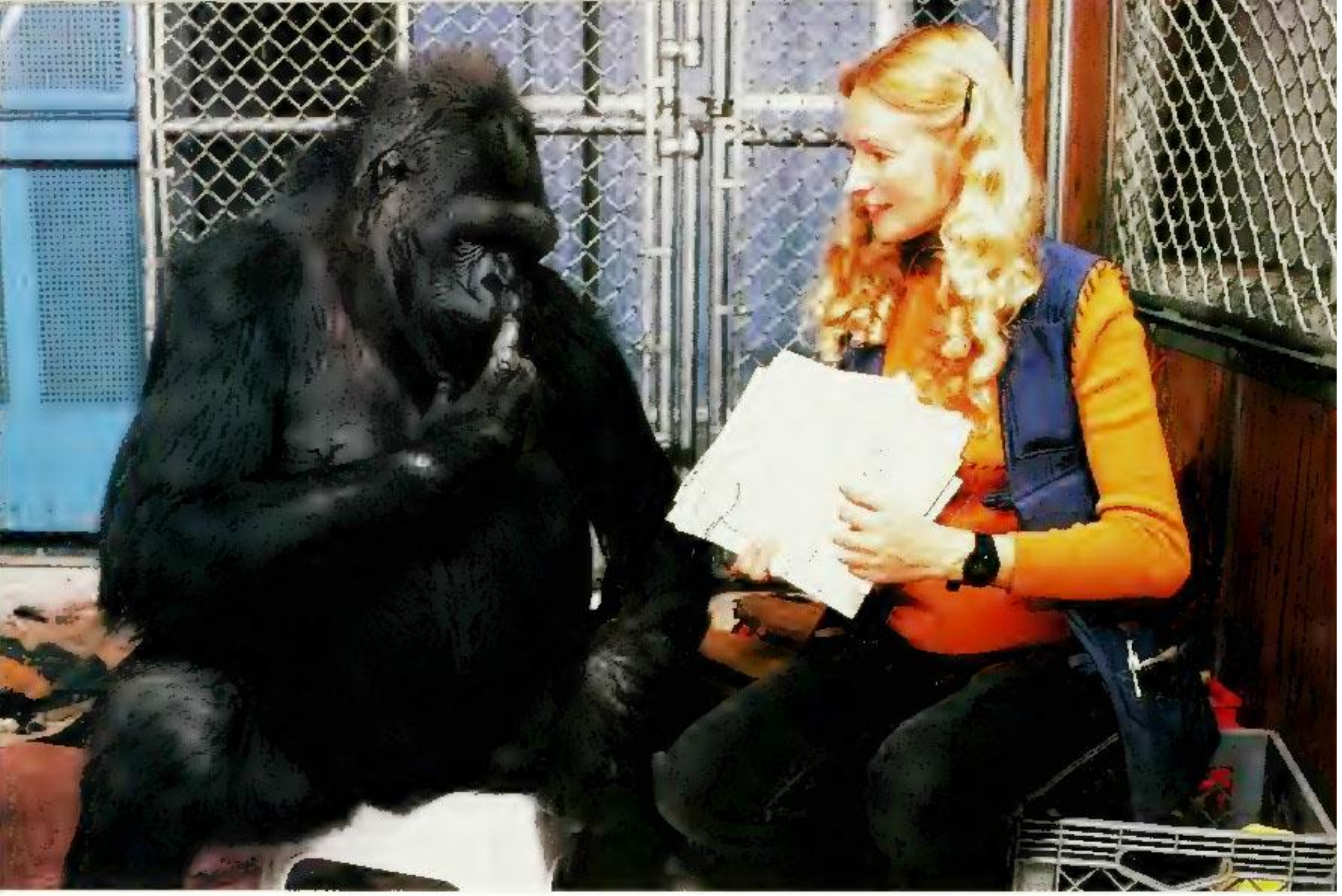
''हम उसे नहीं देख पा रहे, है ना? तुम्हारी बिल्ली को क्या हुआ?''

''बिल्ली सो गई,'' कोको ने इशारे से कहा।

कुछ सप्ताह बाद कोको ने एक सुरमई धारीदार बिल्ली का एक चित्र देखा जो बॉल जैसी दिखती थी। उसने चित्र देख इशारे से कहा, ''रोना, उदास, भौं सिकोड़ना।''

वह दुखद समय था।

कोको ने ''उदास'' होने का इशारा किया।



कोको ने "लाल" का इशारा किया।

ऑल बॉल की मौत की ख़बर जल्दी ही फैली। हमें हज़ारों ख़त मिले। हर उम्र के लोगों ने अपनी सहानुभूति जताई। कुछ ने कार्ड भेजे, कुछ ने फोटो, कई बच्चें ने चित्र बना कर भेजे। उनमें एक ही संदेश थाः कोको की एक नई बिलौटी होनी चाहिए।

क्रिसमस का वक़्त पास आया, मैं कोको के लिए एक नई बिल्ली चाहती थी। पर मुझे पता नहीं था कि यह कितना कठिन सिद्ध होगा।

20 दिसम्बर को बारबरा ने कोको से पूछा, "तुम क्रिसमस पर क्या चाहोगी?"

"बिल्ली, बिल्ली, बाघ बिल्ली," कोको का जवाब था।

हमने एक मैंक्स (बिना पूंछ वाली बिल्ली की प्रजाति) के बारे में सुना जिसके जल्द ही बच्चे होने वाले थे। कई सप्ताहों बाद पता चला वह गर्भवती थी ही नहीं, सिर्फ़ मुटा रही थी।

क्रिसमस आई और चली गई।

जनवरी में मैंने कोको को तीन बिल्लियों के चित्र दिखाए। एक की लम्बी पूंछ थी, दूसरी की छोटी और तीसरी बिना पूंछ वाली थी।

"जब तुम्हें नई बिल्ली मिले, तुम कैसी पसन्द करोगी?" मैंने जानना चाहा।

"वह," कोको ने बिना पूंछ वाली बिल्ली की ओर इशारा किया।

"हम तुम्हारे लिए ऐसी ही बिल्ली लाएंगे," मैंने कहा। "ठीक है ना?"

"अच्छा, बढ़िया," कोको ने जवाब दिया।

"तुम्हें बिल्लियों के बारे में कैसा लगता है?" मैंने जानना चाहा।

"बिल्ली गोरिल्ला मुलाकात करते," उसने इशारों से कहा। "कोको प्यार।"

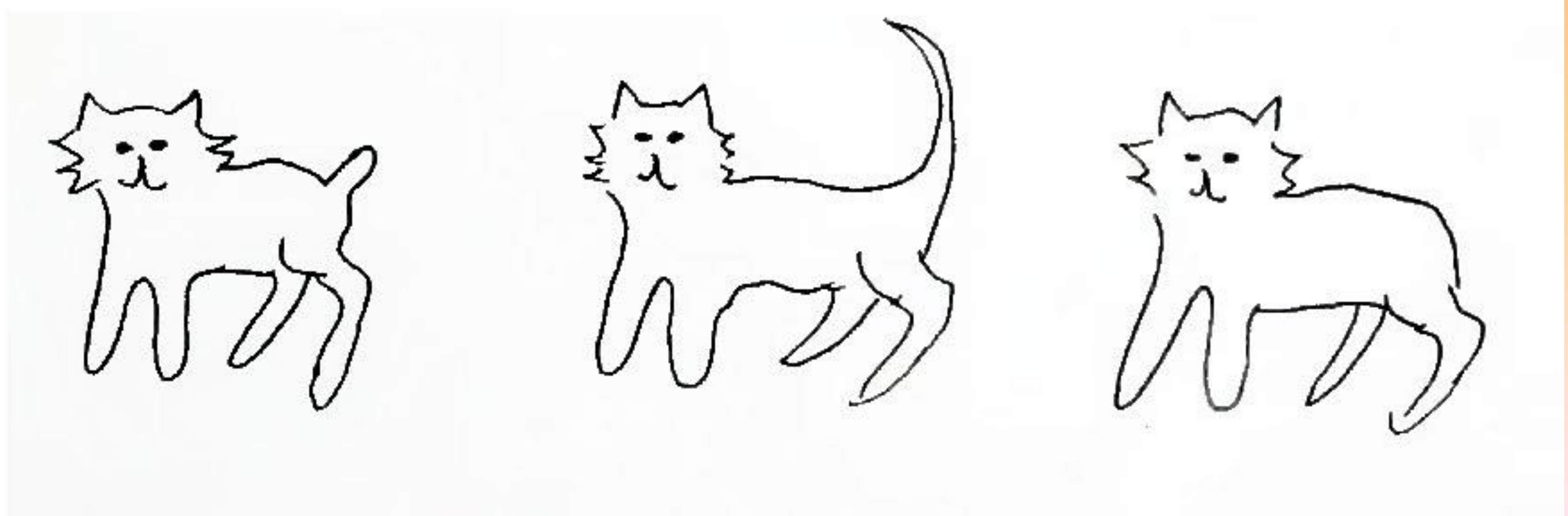
कोको नई बिल्ली के लिए तैयार थी, अगर वह मिल जाती।

और समय बीता। मैंने ह्यूमेन सोसायटी को फोन किया। उनके पास दुर्लभ बिना पूंछ वाली बिल्ली तो छोड़, कोई भी बिल्लियाँ नहीं थीं।

मैंने कई और जगह फोन किए और हर बार निराश हुई। मुझे बताया गया कि साल के उस समय ज़्यादा बिल्लियाँ पैदा ही नहीं होतीं।

इस दौर की सबसे बुरी बात यह थी कि मुझे लगने लगा था कि मैं कोको को निराश कर रही हूँ। जब कोई कोको से पूछता, "तुम्हारी बिल्ली कहाँ है?" मैं कोको को देखती। वह फ़ौरन आस-पास तलाशती, मानों बॉल को ढूंढ़ रही हो।

कोको का चयन



तब हमारी किस्मत बदली। हमें मैंक्स बिल्लियों के एक ब्रीडर का ख़त मिला, जो हमारी मदद करना चाहता था। उसके पास उस वक़्त बिल्ली के कोई बच्चे नहीं थे, पर उसने दूसरे ब्रीडरों से बात की और उसे दक्षिणी कैलिफोर्निया में एक व्यक्ति का पता चला जिसकी बिल्ली ने बच्चे दिए थे। वे माँ से अलग करने की उम्र के होने वाले थे।

हमने 17 मार्च की तारीख़ तय की। उसके एक दिन पहले मैंने कोको को बताया कि उसे नई बिलौटी मिलने वाली है - एक लाल बिलौटी। लाल कोको का चहेता रंग है। यह सुन वह बड़ी उत्साहित हो गई।

तब फिर देरी हुई।

ब्रीडर का फोन आया, "माफ़ करें," उसने कहा। "बिल्ली आज नहीं आएगी।"

कोको दुखी हुई। मैं निराश।

"मुसीबत," कोको ने संकेत किया।

"तुम्हें नई बिल्ली दिलवाने में परेशानी हो रही है। हम बहुत कोशिश कर रहे हैं," मैंने समझाया।

आख़िरकार 24 मार्च को एक लाल और अदरकी रंग की बाघ जैसी धारियों वाली मैंक्स बिल्ली हमारे घर लाई गई। बिलौटी को देख कोको खुशी से घुरघुराई। वह अद्भुत पल था। उसने बिल्ली को छाती पर रखा और सहलाया-दुलराया।

मुझे भी पकड़ने दो," मैंने कहा।

पर कोको ने उसे नहीं छोड़ा। उसने बिलौटी को चूमा, उसे बाँहों में झुलाया।

"बेबी," उसने इशारा किया।

कोको खुश थी। उसकी नई बिल्ली रहने को आ चुकी थी।



कोको अपनी नई बिल्ली लिपस्टिक को दूध पिलाते हुए।

उपसंहार

कोको के परिवार में दो और इन्सान हैं, बारबरा हिल और रॉन कोहन, जो गोरिल्ला फाउन्डेशन के अधिकारी हैं; और एक नर गोरिल्ला माइकल भी शामिल है। बारबरा कोको की सबसे पुरानी दोस्त है। रॉन वह फोटोग्राफर है जिसने शुरु से कोको परियोजना का फाटो दस्तावेजीकरण किया है। वह कोको और माइकल के लिए पिता की जगह रहा है। माइकल कोको से दो साल छोटा है और उसके भाई समान है। माइकल हमारे साथ लगभग उतने समय रहा है, जितना कोको।

गोरिल्ला फाउन्डेशन में हर दिन माइकल और कोको की एक नियमित समय-सारिणी होती है, जिसमें भाषा शिक्षण, समीक्षा, व्यायाम, खाना और खेलना शामिल हैं। कोको और माइकल एक ही ट्रेलर में रहते हैं, जिसे पहले से बड़ा और नया रूप दिया गया है, ताकि दो गोरिल्ला उसमें रह सकें। हरेक गोरिल्ल की अपनी एक-एक रसोई है, एक छोटा सोने का कमरा, और एक बड़ा खेलने का कमरा है। ट्रेलर के पीछे बाड़ों से घिरा स्थान है, जिसमें वे व्यायाम और खेल-कूद कर सकते है। मेरा घर इससे पचास फीट की दूरी पर है। मैं उनकी ज़रूरत पड़ने पर हमेशा मौजूद रहती हूँ।

कोको और माइकल की शिक्षा और देखभाल गोरिल्ला फाउन्डेशन के सदस्यों के अनुदान से की जाती है।

